# बुद्ध-धर्म के
# हीनयान (थेरवाद) और महायाम
# मे भेद

Dhamma.Digital

- लेखक -

**महापण्डित राहुल साँकृत्यायन**

"त्रिपिटकाचार्य"

- प्रस्तुतकर्ता -

**रत्नसुन्दर शाक्य**

"परियत्ति सद्धम्मपालक"

Downloaded from http://dhamma.digital

# बुद्ध-धर्म के

# हीनयान (थेरवाद) और महायान मे भेद

– लेखक –

**महापण्डित राहुल सांकृत्यायन**

"त्रिपिटकाचार्य"

– प्रस्तुतकर्ता –

**रत्नसुन्दर शाक्य**

"[illegible]"

Downloaded from http://dhamma.digital

प्रकाशक : प्रस्तुतकर्ता स्वयं
महालक्ष्मी सडक
थालाछेँ, भक्तपुर-४

पहिलो संस्करण :- ५०० प्रति

बुद्धसम्बत - २५४२
नेपालसम्बत - १११८
विक्रमसम्बत - २०५५
ईश्वीसम्बत - १९९८

मूल्य रू. ५।-

मुद्रक :- विद्या प्रिन्टिङ्ग प्रेस, सुकुलढोका - ८, भक्तपुर

Downloaded from http://dhamma.digital

# बुद्ध-धर्म के
# हीनयान और महायान का भेद

'महायान' और 'हीनयान' यह शब्द प्रारम्भ में इन सम्प्रदायों के लिए नहीं प्रयुक्त होते थे। 'हीनयान' का अर्थ है 'छोटा रथ' या 'छोटा मार्ग'। यह उपाधि महायान के विरोधी निकायों को, जो कि संख्या में अठारह थे और जो बौद्धधर्म के प्रारम्भिक निकाय थे, दी गई थी। इस शब्द को प्रचलित होने में शताब्दियाँ लग गईं। लेकिन आजकल बौद्ध-धर्म का प्राचीन रूप 'हीनयान' ही समझा जाता है। इसी प्रकार महायान भी इस नये निकाय का नाम नहीं माना जाता था। ये दोनों नाम आपस के सम्बन्ध के कुछ कड़ुआपन को प्रकट करते हैं। इसीलिए मैं उचित समझता हूँ कि इन शब्दों के बजाय दूसरे शब्द इस्तेमाल किये जायँ। मैं समझता हूँ कि इसके लिए सबसे उचित शब्द 'प्राचीन बौद्ध-धर्म' और 'विकसित' बौद्ध-धर्म हैं। परन्तु यहाँ पर पाठकों की सुविधा के लिए मैंने वे ही शब्द रखे हैं।

संसार में कई प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। प्रथम वे जो बुद्धिवादी ( Rational ) हैं और केवल कारण को मानते हैं। वे आपका विश्वास तब तक नहीं करेंगे जब तक आप उनके तर्कों का समाधान न कर दें। दूसरे वे लोग हैं जो कारण के लिए कोई परवाह नहीं करते। वे लोग भाव-प्रधान (Emotional) होते हैं। उनके



Downloaded from http://dhamma.digital

चित्त में यदि कोई बात जम जाती है तो वे उस पर विश्वास करते है और उसका पालन करते हैं। थोडे में, ससार में बुद्धिवादी (Rational) और भाव-प्रधान, (Emotional) दो प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। एक ही तरह का धर्म या विश्वास सबको सन्तुष्ट नहीं कर सकता। हम किसी एक धार्मिक विचार में इस विभिन्नता के मुताबिक अन्तर देखते हैं। इसलिए, बौद्धधर्म में भी इसका होना स्वाभाविक था। भगवान् बुद्ध ने दोनों प्रकार के मनुष्यों का ध्यान रखा। प्राचीन बौद्ध-धर्म में भी, जो कि हीनयान कहाता है, दो प्रकार के उपदेश हैं— एक जन साधारण के सन्तोष के लिए और दूसरे बुद्धिवादियों के लिए। इस दशा में भगवान् बुद्ध के उपदेश का ढङ्ग बिलकुल भिन्न था। पाली त्रिपिटक के प्रसिद्ध सूत्रों में से एक में भगवान् बुद्ध ने दिखलाया है कि किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकार के मनुष्यों को उपदेश देने के लिए भिन्न भिन्न ढङ्ग और उपाय होने चाहिए।

अब मैं आपको एक मिसाल देता हूँ। एक छोटा बच्चा एक हाथी के खिलौने से खेल रहा है— चूँकि उसने असली हाथी कभी नहीं देखा है, इसलिए वह उसी को हाथी मानता है। एक युवा पुरूष उसके भ्रम को देखता है और उसको असलियत बतलाना चाहता है - तब उसको क्या करना चाहिए ? सबसे अच्छा तरीका यह है कि उस बच्चे की बुद्धि को भी अपनी तरह ही बढने दिया जाय। लेकिन, यह कभी उचित नहीं है कि बच्चे के हाथ से हाथी का खिलौना छीनकर तोड दिया जाय। उसी प्रकार से बौद्ध-धर्म में भी प्रारम्भ से ही कुछ कम बुद्धिवाले लोगों के मानसिक सन्तोष के लिए स्थान है।



Downloaded from http://dhamma.digital

उदाहरणार्थ, तमाम देवतागण, जो कि पाली और चीनी (तथा अन्य) त्रिपिटकों में पाये जाते हैं, उन पर भगवान् बुद्धका विश्वास नहीं था। बल्कि उनके समय के हिन्दुस्तानी जन-समुदाय उनको मानते थे। इनमें से अधिकांश झूठे और आधुनिक भूविद्या के विरुद्ध हो सकते हैं। यह सम्भव है कि इनमें से कुछ प्राचीन बौद्धों को मालूम थे लेकिन वे आम मानसिक वृत्ति को धक्का नहीं पहुँचाना चाहते थे। इसलिए उन देवताओं के अस्तित्व के विरुद्ध कुछ नहीं कहा गया। लेकिन भगवान् बुद्ध ने अत्यन्त बुद्धिमानी से उनके अस्तित्व (Status) को घटाकर एक सिद्धान्त बनाया कि प्राणिमात्र का जन्म तथा नाश उसके कर्मों के अनुसार होता है। यह विचार भगवान् बुद्ध के पहले ज्ञात नहीं था। क्योंकि प्राचीन देवता बिलकुल विभिन्न थे। वे अमर समझे जाते थे। जैसे-जैसे बौद्ध-धर्म दूसरे-दूसरे देशों में फैला, वहाँ भी उनको उसी प्रकार के विश्वास मिले और उन्होने भी वही भाव धारण किया। यही दशा और देशों, जैसे तिब्बत, चीन, बर्मा आदि में हुई। उनके बहुत से ग्राम-देवता और दूसरे जन-समुदाय से पूजे जानेवाले देवता थे। इसलिए उनको अपने प्रिय देवता से अलहिदा करना उचित नहीं था। क्योंकि निर्बल विचारवाले ही अपने दुखों में सहायतार्थ देवताओं के पास जाते हैं। और यदि यह थोड़ी सी सहायता भी उनसे छीन ली जाती तो वे नाराज हो जाते।

मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया है, कि हीनयानों में से कुछ लोग कहते हैं कि महायान ने हजारों देवता, धार्मिक क्रियायें और बलि आदि की प्रथायें उत्पन्न कर दी हैं; जोकि भागवान् बुद्ध के असली उपदेशों में कहीं नहीं पाये जाते हैं। मैं इन दोनों निकायों के जन



Downloaded from http://dhamma.digital

साधारण के आम रिवाजों में अधिक अन्तर नहीं देखता। जन साधारण अपनी कठिनाइयों के समय कुछ दैविक सहायता चाहते हैं और हालांकि हीनयानियोंने महायानियों की तरह नये देवताओं की उत्पत्ति नहीं की परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि वे अपने स्थान के जन साधारण को नये नये देवता बढ़ाने से रोक सके हैं।... ........... आप देखेंगे कि बहुत से सिंहली हीनयानी लोग ब्राम्हण देवता विष्णु और दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं। बर्मा और स्याम में असंख्य देवताओं की पूजा होती है। ये सब प्राचीन बौद्ध धर्म के लिए नये हैं। इनके नाम प्राचीन पाली त्रिपिटक में कहीं भी नहीं पाये जाते हैं। इसलिए अगर महायान को नये देवताओं की खोज करनी पड़ी थी तो वह इसीलिए कि आम लोगों को उसकी आवश्यकता थी। इसलिए यह कहना कि चूंकि महायान सम्प्रदाय ने बहुत से देवताओं की उत्पत्ति की इसलिए यह भगवान् बुद्ध के असली उपदेशों के विरुद्ध जाता है, ठीक नहीं है। अगर यह कोई पाप है तो दोनों पापी हैं। इसके अलावा हीनयानी कहते हैं कि महायानी सूत्र ऐतिहासिक आधार के विरुद्ध है। वे कपोल-कल्पित कथाओं की तरह हैं जो कि देवताओं और राक्षसों की कहानियों से भरी हुई हैं। और कोई भी बुद्धिवादी उनके ऐतिहासिक बुद्ध के उपदेश नहीं मान सकता। परन्तु यहाँ भी अन्तर केवल श्रेणी का है। आप लोगों को यही समझना चाहिए कि हीनयान प्राचीन बौद्ध-धर्म है और, महायान का अर्थ है विकसित बौद्ध-धर्म—जैसे कि मैं पहले कह चुका हूं। विकसित का यही अर्थ है प्राचीन में कुछ नया जोड़। इसलिए महायानी इसे इन्कार नहीं कर सकते कि हीनयानी सूत्र ऐतिहासिक बुद्ध के उपदेश हैं।...... हीनयानी लोग जो यह चार्ज महायानियों पर लगाते हैं कि उनका



Downloaded from http://dhamma.digital

साहित्य कपोल-कल्पित कथाओं आदि से भरा है उसके जवाब में महायानी लोग भी कुछ हीनयानी सूत्र को वैसा ही बतला सकते हैं, तो हालाँकि कम संख्या में; क्योंकि पाली त्रिपिटक में जोडना- घटाना बहुत ही पहले बन्द हो चुका था। पवित्र बोधिवृक्ष के नीचे मार की लडाई क्या है? क्या सचमुच राक्षस मार काले हाथी पर चढकर बोधिसत्व से लडने आया था? क्या उसके पास दुश्मन से लडने के लिए फौज थी? वहा मार का अर्थ बुरा विचार है। लेकिन इस बुरे विचार का नाश कहानी के रूप में दिखलाया गया था, जिसने कि जनसाधारण को अधिक आकर्षिक किया। उन्होने इसको बुद्ध और मृत्यु के राजा मार के बीच की असली लडाई समझा। यह मार-कहानी असल में हीनयानियों ने ही गढी थी। यह महायानियों की गढन्त नहीं है। आप इसी तरह की बहुत सी मिसालें हीनयानियों के साहित्य में पायँगे, जहाँ की आमतौर की आवश्यकताओं की पूर्ति की गई है। इसलिए हम महायान सूत्रों को उसी अपराध के लिए, जो कि हीनयान सूत्रों में पाया जाता है, दोषी नहीं ठहरा सकते।

इस तुलना से मेरा तात्पर्य यह दिखलाने का है कि नये - नये देवता और कपोलकल्पित सूत्र दानों ही सम्प्रदायों के धर्म-पुस्तकों में पाये जाते हैं। इस बुनियाद पर एक सम्प्रदाय को बुरा नहीं कह सकता। जन-साधारण हमेशा साधारण कहानियाँ, जो कि एक दम असंभव सी होती हैं, पसन्द करता है। आप जानते हैं कि इस तरह की कहानियाँ अपरिपक्व बुद्धिवाले को शिक्षित करने के लिए अच्छी होती हैं। आज हमारे स्कूलों में इस प्रकार की सैकडों कहानियाँ पढाई जाती हैं, जिनमें बच्चे बहुत आनन्द लेते हैं; और उनसे बहुत अच्छे परिणाम निकलते



Downloaded from http://dhamma.digital

हैं। परन्तु कोई इन कहानियों को इसलिए बेकार नहीं कह सकता है कि वे असली ऐतिहासिक आधार पर नहीं हैं। इसी प्रकार हीनयानियों के त्रिपिटक में या महायानियों के धर्म-ग्रन्थों में बहुत से ऐसे सूत्र हो सकते हैं जो कि ऐतिहासिक नहीं हैं। परन्तु यदि वे मनुष्य को अपने जीवन सुधारने में या कठिनाइयों के समय में मस्तिष्क को शान्त करने में सहायता देते हैं (और निश्चय ही उनमें से अधिकांश ये विशेषतायें रखते हैं) तो उन्हें कूड़ा कर्कट नहीं समझना चाहिए।

परन्तु, ये सब अन्तर बाहरी हैं। अब हम उनके भीतर की बातों पर दृष्टि डालें। क्या हीनयान और महायान के मूल तत्वों में कोई अन्तर है? बौद्ध-धर्म के सिद्धान्तों में से सबसे मौलिक सिद्धान्त अनात्मवाद है; अर्थात, अस्थायी होनेवाला नियम बिना किसी अपवाद के हर वस्तु के लिए लागू होता है। इसलिए शरीर के अन्दर एक अमर आत्मा होने की कोई सम्भावना नहीं है। अनात्मवाद का सिद्धान्त महा-यानी भी मानते हैं जिन्होंने इसके लिए बहुत से कारण दिये हैं। पांचवीं शताब्दी में वसुबन्धु के समय से लेकर रत्नाकर शान्ति यानी ग्यारहवीं सदी तक महायानियों ने इस विषय पर बहुत से ग्रन्थ लिखे। इस प्रकार आप हीनयानियों के तमाम मौलिक तत्वों को एक एक कर ले सकते हैं।......... उन सबको आप देखेंगे कि महायानी विद्वानों ने समर्थन किया है। चार आर्य सत्य, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, कर्म-प्रतिफल ( Karmic Retribution ) उन्हें दोनों मानते हैं। तब उनमें मौलिक अन्तर कहाँ रह जाता है? महायान विद्वानों ने जब देखा कि ब्राह्मण विद्वान् भगवान् बुद्ध के कुछ उपदेशों का खण्डन करते हैं तो वे आगे बढ़े और अपने उत्तम तर्कों द्वारा विपक्षियों को हराया। शायद



Downloaded from http://dhamma.digital

स्याम, बर्मा और लंकावाले स्थविरवादी उन कठिनाइयों को नहीं जानते हैं जिनका सामना हिन्दुस्तान में करना पड़ा था। प्रतिद्वन्द्वी दार्शनिक हिन्दुस्तानी संस्थाओं ने (Schools) तर्कशास्त्र के साहित्य को बहुत बढ़ाया था, और इसके पहले कि आप उनको शान्त कर सकें उनके विचारों पर प्रभाव डालना असम्भव है। एक ऐसे देश में जहाँ कि आत्मा के विषय में एक मामूली विचार है, थोड़े से शब्दों में बता देना कि आत्मा अमर नहीं है, कोई मुश्किल बात नहीं है। परन्तु, हिन्दुस्तान में ब्राह्मणों ने केवल इसी विषय पर बहुत बड़ा साहित्य तैयार किया है, और वही जो कि उनके सिद्धान्तों को जानता है, अनात्मवाद की उत्तमता से मुकाबला कर सकता है। अगर हम लोग अपने हिन्दुस्तानी महायान विद्वानों के कार्यों को छोड़ देते हैं तो फिर विरोध पक्ष के सामने अपना विषय रखने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं रह जाता है।

इसलिए, जहाँ तक उच्चतम श्रेणी के दार्शनिक विचारों से सम्बन्ध है, हीनयान और महायान झूठा नाम है। उनके दो पृथक-पृथक सिद्धान्त नहीं हैं। अब एक बात और समझानी है। महायानी, हीनयानी पर यह दोषारोपण करते हैं कि उन्होंने व्यक्ति के सामने व्यक्तिगत मुक्ति को रखकर आदर्श को बहुत गिरा दिया है और महायानी व्यक्तिगत मुक्ति की परवाह नहीं करते। वे कहते हैं कि जब तक सभी प्राणी दुःखों से छुटकारा नहीं पा लेते, तब तक हम लोगों को आत्म-मुक्ति की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हम लोगों का कर्त्तव्य अपने दुखी साथियों की सहायता करना है। पर वे सोचते हैं कि ऐसा ऊँचा आदर्श हीनयानियों के धर्म-ग्रन्थों में नहीं हैं। लेकिन यह गलत है। हीनयानियों की ५५० जातक कथायें केवल इसी उच्च आदर्श को



Downloaded from http://dhamma.digital

बतलाती हैं। जातक कथाओं के बिल्कुल प्रारम्भ में ही हम सुमेध को दूसरों के सहायतार्थ अपने निर्वाण को छोड़ते हुए पाते हैं। वह प्राणियों की मदद के लिए हर प्रकार का बलिदान करता है। वह एक भूखे चीते को बचाने के लिए शरीर त्याग देता है। इसी प्रकार के बहुत से उदाहरण इन कथाओं में पाये जाते हैं। इससे प्रकट होता है कि हीनयानियों ने बोधिसत्व के इस ऊंचे आदर्श से कभी इन्कार नहीं किया।

अगर ऐसा है तो यह कहना कि हीनयानी अपने व्यक्तिगत मोक्ष के लिए बड़े स्वार्थी हैं, ठीक नहीं। अन्तर केवल इतना ही है कि महायानी लोग कहते हैं कि निर्वाण के लिए सिर्फ एक रास्ता है, और वह असंख्य पीडितों को ऊंचा उठाकर बुद्धत्व प्राप्त कराना है; जब कि हीनयानी लोगों का ख्याल अपने दुखों से अति शीघ्र छुटकारा पाना है; और वे श्रावक या 'प्रत्येक' का मार्ग ग्रहण कर सकते हैं—जिसका अर्थ है व्यक्तिगत मोक्ष। लेकिन कोई भी हीनयानी यह नहीं कह सकता कि यह आदर्श बोधिसत्व आदर्श के समान है। इस प्रकार, उनके जीवन के आदर्शों में भी अधिक अन्तर नहीं है। अब यह समय नहीं है कि उन पर अधिक जोर दिया जाय। उन दिनों कुछ ऐसे कारण रहे होंगे जिससे कि इन अन्तरों को सम्मुख रखा गया था। लेकिन अब हमको निष्पक्षरूप से विचार करना चाहिए और बौद्धधर्म के भिन्न भिन्न सम्प्रदायों में से उत्तम बातों को ग्रहण करना चाहिए। बहुत से गुण जो कि हीनयानी त्रिपिटक में हैं जिन्हें महायानियों को ग्रहण करना चाहिए और इसी प्रकार महायानियों के गुणों को हीनयानियों को ग्रहण करना चाहिए। उदाहरणार्थ, एक समय था जब कि लोग उस जीवनी को जो कि बिना बहुत से चमत्कारों तथा दैवी वर्णन के कही जाती थी—अधिक



Downloaded from http://dhamma.digital

पसन्द नहीं करते थे। लेकिन अब बुद्धि का युग है। लोग अब अपने गुरु के विषय में अधिक बुद्धिवादी कहानियाँ चाहते हैं और यदि आप असली ऐतिहासिक बुद्ध का पता लगाना चाहते हैं तब आपको हीनयानी धर्मग्रन्थों का अवलोकन करना होगा। उनमें आपको बुद्ध मनुष्य के रूप में मिलेंगे। एक अरक्षित भिक्षु किसी भयानक रोग से ग्रसित है, भगवान् बुद्ध उसको देखते हैं। वे अपने हाथों से उसके शरीर को साफ करते हैं और फिर उसको अपने बिस्तर पर लेटाते हैं। इस प्रकार के बहुत से उदाहरण बुद्ध की जीवनी में हैं। अगर चमत्कारों और दैवी बातों को छोडकर ये सब इकट्ठे किये जायँ तो आप बुद्ध का आचरण अधिक उत्तम पायेंगे।

इस विषय में महायानी सूत्र पिछड जाते हैं। इसलिए बुद्ध का यह मानवी चरित्र ( Human element ) हीनयानी धर्म ग्रन्थों से पूर्ण किया जा सकता है। महायान ने उच्च दार्शनिक – नागार्जुन और असङ्ग दिये हैं। उन्होंने बुद्ध के असली विचारों को भली भाँति दरसाया है। उन्होंने असली विचारों से कुछ अधिक नहीं किया है बल्कि उन्हीं का समर्थन करके उनको अधिक साफ कर दिया है। कभी कभी भगवान् बुद्ध कहते हैं कि मेरे तमाम उपदेश एक बेडे के समान हैं। उनसे पार करना है न कि उन्हें पकडे रहना। इस प्रकार की उपमाओं को लेकर महायानी विद्वानों ने धर्म को समझाने के लिए बहुत से सिद्धान्तों ( Theories ) का निर्माण किया। इस बात के समाधान करने की आवश्यकता है कि भगवान् बुद्ध और नागार्जुन के दार्शनिक – विचार ( Philosophy ) भिन्न अथवा प्रतिद्वन्द्वी सिद्धान्त के क्यों नहीं हैं। उसकी अधिक व्याख्या करने से विषय अधिक पारिभाषिक (Tech-



Downloaded from http://dhamma.digital

nical ) हो जायगा । नागार्जुन के दार्शनिक विचारों के अनुसार वस्तुओं की स्थिति केवल एक दूसरे के सम्बन्ध पर निर्भर है। जैसे ठण्डा और गरम, अंधेरा और उजेला, छोटा और बड़ा । इस छोटी सी विधि (Formula) का उसने हर स्थान पर प्रयोग किया । अवश्य ही यह विचार हीनयान सम्प्रदाय के कट्टर उपदेशों के विरुद्ध नहीं जाता । जब संसार में प्रत्येक वस्तु क्षणिक है और कुछ भी अमिट (स्थायी) नहीं है तब हम किसी वस्तु की कीमत केवल उसके सम्बन्ध से जानते हैं । इसलिए इन वस्तुओं का सम्बन्ध उस असली सर्वभौमिक क्षणिकता के सिद्धान्त का शेष सिद्धान्त है ।

असंग की योगाचार संस्था बौद्धदर्शनशास्त्र के लिए एक दूसरा दान है । यह एक बहुत ही गम्भीर और उच्च कोटि का दर्शन है, जो कि अब भी बड़े बड़े ब्राह्मण विद्वानों के विचारों को उत्तेजित (Inspires) करता है। इसी संस्था से हिन्दुस्तान की आधुनिक वेदान्ती संस्था (School) निकली है । इसी संस्था ने वसुबन्धु, दिङ्नाग, धर्मकीर्ति तथा अन्य बहुत से दार्शनिक पैदा किये । इस संस्था का मुख्य ग्रन्थ विज्ञानपतिशास्त्र है जो कि अपने भाष्य ( Commentary ) के साथ चीनी अनुवाद में पाया जाता है । यह एक ऐसा प्रसिद्ध ग्रन्थ है कि संस्कृत में इसका पुनरुद्धार होना बहुत आवश्यक है । मैंने इसका फ्रेंच, अनुवाद भी देखा है । मैं उसी फ्रेंच अनुवाद से इसका पुनरुद्धार करना चाहता था, परन्तु उस भाषा के विद्वानों से मदद न पाने के कारण मैं उसको शुरू न कर सका । भाग्यवश मेरे स्वर्गीय मित्र 'वाङ्ग मो लं' (शंघाइ के "चीनी बौद्ध" के भूतपूर्व सम्पादक) लङ्का आये और मेरे साथ ठहरे और आपस की मदद से कुल किताब का कुछ मामूली अनुवाद



Downloaded from http://dhamma.digital

किया। श्रीवाङ्ग ने अपनी किताब का पहला अध्याय छपवाया। उनका अनुवाद बहुत ही ठीक तथा प्रवाह-पूर्ण है। यह "चीनी बौद्ध" के विशेषांक के रूप में छपा था। श्रीवाङ्ग से हम लोगों को बहुत आशा थी। परन्तु शोक! वे अपनी महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने के लिए जीवित न रह सके। मेरे अनुवाद का आधा दोहराया जा चुका था और किताब का आधा भाग संस्कृत में छप चुका है। शेष आधा मुझें पूरा करना है।

यदि दोनों संस्था (हीनयान और महायान) ओं में कुछ अन्तर है तो बहुत ही छोटी-छोटी बातों में है। वे यदि कुछ मूल्य रखती हैं तो उन्हीं लोगों के लिए जो कि सच्चे और ऊँचे सिद्धान्तों को नहीं समझ सकते। दार्शनिक विचारों से वे दोनों असल में एक ही हैं।

'धर्मदूत'
वर्ष - ४, अङ्क - १०
(फरवरी, १९३९)

□ ★ □

Dhamma.Digital

# लेखकका संक्षिप्त जीवन-क्रम

जन्म:- ९ अप्रिल, १८९३। आजमगढ, उत्तरप्रदेश, भारत।

मातापिता.- **कुलवन्ती देवी र गोवर्द्धन पाण्डे।**

शिक्षा.- आजमगढमे मिडिलतक। आगरामे अरबी, फारसी की पढाई और लाहौर तथा काशी मे संस्कृत।

१९१२-१३ :- परसा मठके साधु तथा महन्त के उत्तराधिकारी।

१९१३-१४ :- वैष्णव साधु होकर दक्षिण भारतका पर्यटन।



Downloaded from http://dhamma.digital

१९१४:–परसा वापस। अयोध्यामे तीन मास। आर्यसमाज प्रति आकर्षण

१९१५ :– आर्यसमाज प्रचारक। पहले लेखोंका प्रकाशन।

१९१६ :– लखनऊ मे पहलीबार बौद्ध साहित्य की जानकारी प्राप्त।

१९१७-२१ :– बौद्धतीर्थस्थलोंका भ्रमण। असहयोग आन्दोलन के दौरान राजनीति मे प्रवेश।

१९२२ :– बक्सर जेल मे ६ मास। छपरा जिल्ला कांग्रेस के मंत्री।

१९२३–२५ :– हजारीबाग जेल मे। १९२६:– लद्दाख यात्रा।

१९२७-२८ :–श्रीलंका मे संस्कृत के अध्यापक, बौद्ध साहित्यका अध्ययन

१९२९-३०:– नेपाल मे अज्ञातवास, पहिली तिब्बत-यात्रा, बौद्ध भिक्षु।

१९३२-३३:– इङ्गलैण्ड और यूरोप मे। १९३४:– दूसरी तिब्बत यात्रा

१९३५ :– जापान, कोरिया, मंचूरिया, सोवियत–भूमि एवं इरान यात्रा

१९३६:– तीसरी तिब्बत-यात्रा। १९३७:–सोवियत- भूमि मे दूसरीबार

१९३८ :– चौथो तिब्बत-यात्रा। रसियन पत्नी लोलासे पुत्रका जन्म।

१९३९ :– किसान संघर्ष, अमबारी-सत्याग्रह। सिर पर लाठी, जेल मे।

१९४०-४२ :– किसान सम्मेलनके सभापति। हजारीबाग जेल मे।

१९४३ :– चौंतिस साल बाद जन्म ग्राममे। उत्तराखण्ड की यात्रा।

१९४४-४७ :– लेनिनग्राद (सोवियत–भूमि) मे प्राध्यापक।

१९५० :– मसूरी मे अपना घर। कमला से विवाह।

१९५३–५५ :– नेपाल-यात्रा। पुत्री और पुत्रका जन्म।

१९५८ :– चीन मे साढे चार मास। साहित्य एकेदेमी पुरस्कार प्राप्त।

१९५९–६१ :– श्रीलंका मे दर्शन शास्त्र के महाचार्य।

१९६१ :– दिसम्बर महीने मे "स्मृतिलोप" का आघात।

१९६२–६३ :– सोवियत – भूमि मे सात महीने चिकित्सा।

निधन :– १४ अप्रिल १९६३। दार्जिलिङ्ग, पश्चिम बंगाल, भारत।



Downloaded from http://dhamma.digital

# लेखकका बुद्ध–धर्म सम्बन्धि पुस्तक

| पुस्तकका नाम | लेखनकाल |
| --- | --- |
| १. मेरी लद्दाखयात्रा | — सन् १९२६ |
| २. श्रीलंका | — सन् १९२६/२७ |
| ३. बुद्धचर्य्या | — सन् १९३० |
| ४. तिब्बत मे सवा बरस | — सन् १९३१ |
| ५. धम्मपद (पाली – संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद) | — सन् १९३३ |
| ६. तिब्बतमे बौद्ध धर्म | — सन् १९३३ |
| ७. मज्झिम निकाय (पाली – हिन्दी अनुवाद) | — सन् १९३३ |
| ८. विनय पिटक (पाली – हिन्दी अनुवाद) | — सन् १९३४ |
| ९. दीघनिकाय (पाली – हिन्दी अनुवाद) | — सन् १९३५ |
| १०. पुरातत्त्व निबन्धावली | — सन् १९३६ |
| ११. बौद्ध दर्शन | — सन् १९४२ |
| १२. सिंह सेनापति | — सन् १९४२ |
| १३. जय यौधेय | — सन् १९४४ |
| १४. बौद्ध संस्कृति | — सन् १९४९ |
| १५. विस्मृत यात्री | — सन् १९५३ |
| १६. अतीत से वर्तमान | — सन् १९५३ |
| १७. सरहपाद – दोहाकोश | — सन् १९५४ |
| १८. महामानव बुद्ध | — सन् १९५६ |
| १९. सिंहल के वीर | — सन् १९६१ |
| २०. पालि साहित्यका इतिहास | — सन् १९६१ |

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital